भजन

तर्ज– ओ बसंती पवन पागल

न जुदाई है जहां पर,चलो चलें पिया रहें वहीं

1– खूब देखी माया तेरी न्यारा ये इक खेल है
खेल खेल में हम रूहों की बन गई ये जेल है
कैद रूहें कैसे निकलें अपना तो कुछ बल नहीं

2– याद न था कुछ भी हमको कौन हैं जाना कहां
खोल नैना रूह के तुमने दिखा दिया अपना मकान
सुख अर्श के याद आयें तो सही न जाए दूरी अभी

3– ख्वाब में भी साथ अपने लाये हो न्यामत बका
पर यहां पर रूहें तेरी न कर सकीं वो हक अदा
क्योंकि खाकी बुत यहां पर असल इश्क वो देदोधनी

4– ख्वाब से संदेसा पहुंचेगा कभी क्यूंकर तुम्हें
जान ही लीजो खुद ही पिया जी दिल में हो जब तुम मेरे
बेबसी यहां रूह की ऐसी छोड़ के तन ये निकलती नहीं